Dr. Madan Paswan,
Assistant Prof. of History Dept.,
class: B.A. Part-II (Hons.) Paper-VIth.
Topic: Consequences of Second World war.

Lecture No. 34
Date: 31.10.2020
Continue Lecture of date - 30.10.2020

युद्ध और मुद्राप्रसार के कारण फ्रांस में कृषि को बड़ी हानि हुई। युद्ध में लगभग एकदर्जन डिपार्टमेन्ट (अथवा France में प्रशासनिक उद्देश्य से पूरे देश को बड़े-बड़े जिलों में बाँटा गया है जो Department कहलाते हैं।) पर कब्जा हुआ था। साथ ही युद्ध में बड़ी संख्या में लोगों को सेना में भर्ती करना पड़ा था और पशुओं को भी युद्ध के कार्य के लिए इस्तेमाल किया गया। इससे कृषि कार्य बुरी तरह से प्रभावित हुआ था।

देश में खाद्यान्न की उपज बहुत कम हो गई और खाद्यान्न का आयात बढ़ाना पड़ा। कटी फसल को एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाना बड़ी समस्या बन गया।

इस प्रकार, कृषि का पारंपरिक ढाँचा अस्त-व्यस्त हो गया। महिलाएं अभी तक घरेलू काम के लिए ही नियुक्त की जाती थी। अब उन्हें factories के काम के लिए भी नियुक्त करना पड़ा। जिसमें—

(क) गाँवों से पलायन और आर्थिक कठिनाईयों के कारण 1921-22 ई० में परिस्थिति उत्तेजनापूर्ण रही।
(ख) 1920 में हड़तालों की एक लहर आई जिसने परिवहन व्यवस्था और अनेक बड़े औद्योगिक क्षेत्रों को निष्क्रिय कर दिया।
(ग) हड़ताल कमिटियों के फलस्वरूप मजदूरों को दिन में केवल 8 hours काम करने का अधिकार मिल गया।
(घ) धनाढ्य वर्ग को हड़ताल कमिटियों और उनके माँगों से चिंता हुई।
(ङ) अन्ततः सामाजिक उथल-पुथल के डर से दक्षिणपंथी प्रतिक्रिया को जन्म दिया।

युद्ध के बाद राज्य की शक्ति पहले से कहीं अधिक बढ़ गई थी। संसाधन जुटाने, factries के निर्माण तथा श्रोधार्थ को नई दिशा देने के लिए अर्थव्यवस्था में हस्तक्षेप करना पहले से अधिक आवश्यक हो गया था।

Contd...

फलतः कार्यपालिका की शक्ति में वृद्धि हुई थी और जनतांत्रिक आधार पर गठित न्यायालिकाओं की शक्ति कम हो गई थी।

— Dr. Madan Paswan History.